मैकियावली अपने युग का शिशु किस प्रकार है ? -

युग का शिशु -

मैकियावली का राज० चिन्तन यथार्थवादी एवं व्यावहारिक था। डनिंग ने मैकियावली को अपने युग का शिशु कहा, जिसका अभिप्राय है कि मैकियावली पर तत्कालीन परिस्थितियों का ज्यादा प्रभाव था। कोई अन्य विचारक परिस्थितियों से इतना प्रभावी नहीं हुआ, सेबाइन ने यहाँ तक कहा कि यदि मैकियावली किसी अन्य देशकाल में पैदा होता तो उसके विचार ऐसे न होते। मैकियावली के समय यूरोप और इटली में तीव्र सामाजिक, राज०, आर्थिक परिवर्तन हो रहे थे। सामन्तवादी व्यवस्था का विघटन हो रहा था। पूर्ण निरंकुश राजतंत्र का विकास हुआ और कैथोलिक चर्च की वैधानिक शक्तियाँ समाप्त हो रही थीं, तत्कालीन यूरोप में वैज्ञानिक सोच प्रारम्भ हुई। व्यापार वाणिज्य की वृद्धि तथा नए मध्यम वाणिज्यिक वर्ग का उदय हुआ। सेबाइन के अनुसार यूरोप और इटली में हो रहे परिवर्तन पर जितनी सूक्ष्म दृष्टि मैकियावली की थी, ऐसी अन्य किसी विचारक की नहीं रही।

उपरोक्त दशाओं से मैकियावली ने जो मानव स्वभाव का विचार प्रस्तुत किया, उसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को सबसे ज्यादा प्यारा अपनी सम्पत्ति, सुरक्षा, आर्थिक लाभ है, उसके लिए ही व्यक्ति आपस में संघर्षरत है।

Scanned with CamScanner

मानव का मूल उद्देश्य इस जीवन में भौतिक समृद्धि अर्जित करना है, प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों की पूर्ति के लिए ही प्रयत्नशील है। मानव के इस भौतिकवादी और लौकिक स्वभाव का वर्णन स्पष्ट रूप में उसकी विशेषताओं से प्रभावित प्रतीत होता है। सेबाइन के अनुसार मैकियावली द्वारा प्रस्तुत मानवीय स्वभाव सार्वभौमिक अहंवाद का उदा० है, जिसका अभिप्राय है प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थी और लालची होता है। मैकियावली के अनुसार इटली के लोग बौद्धिक रूप से अधिक कुशल और पतित हैं। परन्तु व्यक्ति मूल रूप में स्वार्थी और असाधु पूर्णतः भ्रष्ट है, इन्हीं परिस्थितियों के आधार पर उसने पूर्ण शक्तिशाली निरंकुश राजा का समर्थन किया जो इटली की एकता स्थापित करने में सहायक होगा और इटली को एक शक्तिशाली राज्य बनाया जायेगा।

मैकियावली फ्लोरेन्स प्रांत का निवासी था जो इटली का एक प्रांत था और तत्कालीन इटली फ्लोरेंस, नेपल्स, वेनिस, मिलान, और चर्च राज्यों में विभाजित था। मैकियावली के अनुसार इटली के एकीकरण के लिए चर्च की आन्तरिक शक्ति सबसे बड़ी बाधा थी, इसके और तत्कालीन यूरोप में निरंकुश राजतंत्री शासनप्रणाली का विकास हो रहा था। ब्रिटेन, स्पेन, फ्रांस जैसे यूरोपीय देशों की एकता का मूल कारण एक शक्तिशाली राजा का आविर्भाव था, स्पेन तथा फ्रांस, इटली पर सदैव आक्रमण करते थे तथा उसे हमेशा विभाजित रखना चाहते थे। मैकियावली के अनुसार 'शक्तिशाली राज्य या राजा इटली का आन्तरिक एकीकरण करेगा और इटली की बाह्य शत्रुओं से रक्षा भी करेगा।

Scanned with CamScanner

मैकियावली ने राज्य का सावयवी दृष्टिकोण से चित्रण करते हुए कहा कि जैसे राज्य में प्रवृत्ति ... का सकता है, उसके राज्य अथवा आक्रमण का सकता है, उसको आक्रमण से बचने हेतु सदैव तैयार रहना चाहिए। मैकियावली के अनुसार राजा को सदैव शक्तिशाली सेना व्यवस्था का निर्माण करना चाहिए।

इटली पुनर्जागरण का केन्द्र था और पुनर्जागरण आन्दोलन द्वारा मध्यकाल के अन्धकार युग की समाप्ति हो रही थी, इस आन्दोलन में मानव गरिमा पर अत्यधिक बल प्रदान किया गया तथा पारलौकिकता के स्थान इहलौकिकता को महत्वपूर्ण माना गया। उसका प्रभाव मैकियावली के चिन्तन पर स्पष्ट है। उसने यूनानी और मध्यकालीन विचारधारा को अस्वीकारते हुए राज्य और नैतिकता के मध्य पृथक्करण स्थापित कर दिया, उसके अनुसार राज्य के कार्यों पर कोई नैतिक बन्धन आरोपित नहीं होते। उसने नैतिकता की नई परिभाषा देते हुए कहा कि राज्य को शक्तिशाली बनाना ही राज्य की सबसे बड़ी नैतिकता है। राजा को सार्वभौमिक नैतिक मानदण्डों के अनुसार व्यवहार नहीं करना चाहिए, राजा को यह भी सोचना चाहिए कि धर्म का राज्य उद्देश्यों हेतु प्रयोग किस प्रकार किया जाए। उसने राज्य और धर्म के मध्य पृथक्करण द्वारा धर्मनिरपेक्ष चिन्तन का आधार रखा। मैकियावली के अनुसार यदि साध्य पवित्र है तो किसी भी साधन का प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

मैकियावली के चिन्तन में राष्ट्रवादी विचार स्पष्ट रूप में दिखते हैं ऐसी स्वेवाइन की मान्यता है क्योंकि सामंतवादी युग के बाद यूरोप में राष्ट्रराज्य का विकास आरम्भ हुआ।

मैकियावली राजन दैवासिक नहीं बल्कि मूलतः एक कूटनीतिक था, हैबर के अनुसार उसने राज विज्ञान का नहीं बल्कि नीति विज्ञान का प्रतिपादन किया, उसके अनुसार व्यावहारिक रूप में राजा को शासन करने हेतु शेर जैसा साहसी और लोमड़ी जैसा चालाक होना चाहिए। उसने सीजर बोर्जिया को आदर्श राजा के रूप में चित्रित किया, उसके अनुसार व्यक्ति का जीवन विवेक से नहीं बल्कि भावना से निर्देशित होता है, मनुष्य पर जिन चार तत्वों का प्रभाव होता है उसमें ① प्रेम ② घृणा ③ भय ④ अवमानना है। उसके अनुसार राजा को प्रेम और भय के सम्मिश्रण से शासन करना चाहिए। राजा का उद्देश्य इस विश्व में यश, कीर्ति और शक्ति प्राप्त करना है, इस विश्व में किसी प्रकार की नैतिक व्यवस्था नहीं पाई जाती। राजा को नैतिक पालन के बजाए शक्ति अर्जन का प्रयास करना चाहिए।

आलोचना एवं मूल्यांकन -

① आलोचकों के अनुसार मैकियावली का विचार देश एवं काल हेतु संकीर्ण है। अतः मैकियावली के विचारों की उपयोगिता केवल 15, 16 वी शताब्दी इटली हेतु है अन्यत्र यह प्रासंगिक नहीं है।

(2) मैकियावली को धूर्तता, धोखेबाजी तथा अवसरवादी का पर्याय माना जाता है।

(3) इसके मानव स्वभाव और इतिहास का वर्णन भी निराशावादी है।

(4) मैकियावली ने इतिहास के यथार्थवादी विश्लेषण का दावा किया परन्तु मूल रूप से उसने इतिहास का विश्लेषण अपनी पूर्व मान्यताओं के आधार पर किया।

बचाव -

(1) मैकियावली ने राज० चिन्तन में एक नई विचारधारा का प्रतिपादन किया, जिसका दीर्घकालिक महत्व हुआ। वर्डी के अनुसार - मैकियावली के विचारों को समग्रता में समझना चाहिए और उसकी रचना डिसकोर्स देखने से यह प्रतीत होता है कि धोखेबाज, अवसरवाद और चालाकी का जनक नहीं है बल्कि इसने तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर अपना समाधान प्रस्तुत किया है। इसके अनुसार डिसकोर्सेस में स्पष्ट कहा गया है कि गणतांत्रिक शासन सबसे बेहतर है।

(2) फोस्टर ने मैकियावली का बचाव करते हुए कहा कि मैकियावली की रचना राज० शिक्षा का ग्रन्थ है जिसमें तत्कालीन राज० का यथार्थवादी एवं नग्न चित्रण किया, इसके लिए मैकियावली को दोषी ठहराना उचित नहीं है। मैकियावली ने कला का प्रयोग किया, यह शासकों और राजनेताओं पर निर्भर है कि वो इसका प्रयोग किस रूप में करें।

③ मैकियावली के विचार आज भी प्रासंगिक है, इसका दर्शन देशकाल के लिए सीमित नहीं है। इसके द्वारा प्रस्तुत कूटनीति की कला, शासनकला तथा यथार्थवादी राजनीति का महत्व आज भी निर्विवाद रूप से प्रभावी है।

निष्कर्ष -

मैकियावली का चिन्तन एक नए मार्ग की खोज है। यह यथार्थवादी और कूटनीतिक कला का मार्मिक विश्लेषण है, इसके पश्चात् व्यवहार पर इसका प्रभाव पड़ा और राष्ट्रवाद की प्रवृत्तियाँ भी मैकियावली के विचारों से बलवती हुई।

Scanned with CamScanner